महाविद्यालयीन छात्र – छात्राओं में एड्स जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(शा. महाविद्यालय भितरवार ग्वालियर के विशेष संदर्भ में)

डॉ (श्रीमती) विमलेश अग्रवाल
प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग, शा. महा० भितरवार
जिला ग्वालियर (म.प्र.)

सारांश

भारत में एच.आई.वी. संक्रमण का पहला मामला 1986 में चेन्नई में रिपोर्ट किया गया। इस रोग का ऐसा कोई विषेश लक्षण नहीं है जिसके द्वारा संक्रमित व्यक्ति को पहचाना जा सके। साथ ही एड्स ग्रसित व्यक्ति को भी लम्बे समय तक यह जानकारी नहीं रहती है कि वह एच.आई.वी. पोजिटिव है।

एड्स फैलने के मुख्य रूप से चार स्त्रोत हैं–

1. संक्रमित व्यक्ति से यौन सम्बन्ध, समलिंगीय और विशमलिंगीय दोनों में ही।
2. एच. आई. वी संक्रमित खून शरीर में प्रवेश कराने से।
3. संक्रमित सुई या सिरिंज से दवा चढ़ाने से।
4. संक्रमित माँ से गर्भस्थ शिशु में, यहाँ प्रत्येक बच्चे के जन्म पर 30 से 50 प्रतिशत अवसर होते हैं।

इस प्रकार एड्स एक वायरस से फैलने वाला गम्भीर व लाइलाज रोग है। नगरों में एड्स के प्रति जागरूकता देखा जाती है लेकिन गाँव व कस्बे में यह जगरूकता अपेक्षाकृत कम देखी जाती है। यह ज्ञात करने के लिए शासकीय महाविद्यालय भितरवार ग्वालियर (म०प्र०) के 50 छात्राओं का अध्ययन किया गया और यह पता लगाने का प्रयास किया गया कि उनमें एड्स के प्रति जागरूकता है या नहीं। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि छात्र – छात्राओं को एड्स की जानकारी है और यह जानकारी उन्हें पत्र–पत्रिकाओं, दूरदर्षन कार्यक्रम तथा महाविद्यालय में एड्स जागरूकता कार्यक्रम से प्राप्त हुई।

वर्तमान समय में एड्स की जानकारी के लिए सरकार द्वारा पर्याप्त प्रचार – प्रसार कराया जा रहा है ताकि जन – जन तक इसकी जानकारी पहुँचाई जा सकें क्योंकि ”एड्स की जानकारी ही एड्स का बचाव है।”

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ (श्रीमती) विमलेश अग्रवाल,

महाविद्यालयीन छात्र – छात्राओं में एड्स जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (शा. महाविद्यालय भितरवार ग्वालियर के विशेष संदर्भ में),

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 46.52,
Artcile No. 9 (SM 469)

http://anubooks.com/?page_id=581

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा एड्स को महामारी माना गया है विष्व की लगभग 0.6% जनसंख्या HIV संक्रमित है। वर्तमान में HIV अफ्रीका में 90 मिलियन लोगों को संक्रमित करने को तैयार है। ऐसा माना जाता है कि HIV की उत्पत्ति उप – सहाराई अफ्रीका के गैर मानवीय वानरों में छुपी और 19वीं सदी के अंत में या 20वीं सदी के प्रारंभ में यह मनुश्यों में स्थानांतरित हुई। "एच.आई.वी. – 1 व एच आई बी – 2 दोनों की उत्पत्ति मध्य – पश्चिमी अफ्रीका में हुयी। HIV की उत्पत्ति दक्षिणी कैमरून में जंगली चिपांजी को संक्रमित करने वाले एक सिमियन इम्युनोडेफिशियंसी (HIV) एक लेटिवायरास (रेट्रोवायरस) परिवार का एक सदस्य है जो अक्वायर्ड इम्युनोडेफिशियेसी सिड्रोम एड्स का कारण बनता है। यह एक अवस्था होती है जिसमें प्रतिरक्षा तंत्र विफल होने लगता है जिससे ऐसे अवसरवादी संक्रमण हो जाते हैं, जिनसे मष्त्यु को खतरा होता। 1981 में इसकी खोज से लेकर 2006 तक एड्स 25 मिलियन से अधिक लोगों की जान ले चुका है।

भारत में एच.आई.वी. संक्रमण का पहला मामला 1986 में चेन्नई में रिपोर्ट किया गया। इस रोग का ऐसा कोई विशेष लक्षण नहीं है, जिसके द्वारा संक्रमित व्यक्ति को पहचाना जा सके। साथ ही लम्बे समय तक एड्स ग्रसित व्यक्ति को भी यह जानकारी नहीं होती कि वह एच.आई.वी. पोजीटिव है, केवल रक्त परीक्षण द्वारा ही एच.आई.वी. संक्रमण का पता चलता। एच.आई.वी. संक्रमण के चार चरण होते है – उष्मायन काल, तीव्र संक्रमण, विलंब चरण और एड्स। उश्मायन काल लक्षणविहीन होती है, इसकी अवधि 2 से 4 सप्ताह तक होती है, दूसरा चरण तीव्र संक्रमण 28 दिनों तक चलता है, विलंवता चरण में दो हफ्ते से 20 वर्श या उससे भी अधिक समय तक चल सकता है, एड्स का चौथा चरण भी अवसरवादी संक्रमणों की तरह ही लक्षण व्यक्त करता है इसमें व्यक्ति को इंफ्लुज्जा या मोनों न्यूक्लिआसिस जैसी कोई बीमारी विकसित हो जाती है।

भारत के सभी राज्यों में एच.आई.वी. संक्रमण की दर अलग – अलग है। श्री राम आहूजा ने बताया कि अनुसंधान एवं नियंत्रण केन्द्र पुणे का मत है कि मुंबई की लालबत्ती क्षेत्र की वेष्याएं केवल प्रति घंटा 3 या 4 एच.आई.वी. संक्रमित मामले उत्पन्न करती है। इसका अर्थ यह हुआ है कि संसार में प्रति 15 मिनट में 400 नवीन एच.आई.वी. संक्रमित रोगियों में से एक मुबंई में उत्पन्न होता है। एच.आई.वी. मुख्यतः यौन रास्तों और खून से खून के सम्पर्क होने से फैलता है। रेखादत्त के अनुसार एच.आई.वी. फैलने का प्रमुख मार्ग लिंगी यौन सम्पर्क है, विष्व के 80 प्रतिषत एड्स के मामले इसी माध्यम से हुये हैं।

इसके फैलने के मुख्य चार स्त्रोत होते हैं–

1. संक्रमित व्यक्ति से यौन संबंध समलिंगिय और विशमलिंगीय दोनों ही
2. एच.आई.वी. संक्रमित खून षरीर में प्रवेष कराने से
3. संक्रमित सुई या सिरिंज से दवा चढ़ाने से
4. संक्रमित मां से गर्भस्थ षिषु में यह प्रत्येक बच्चे के जन्म से 30 से 50 प्रतिषत अवसर होते हैं।

एच.आई.वी. पोजिटिव व्यक्ति को देखने, छूने से, उसके साथ रहने, उसके व्यवहार के तरीके से आदि से इसके बारे में कोई भी जानकारी नहीं होती। यही कारण है कि वर्तमान में हर व्यक्ति के लिये यह आवष्यक है कि वह इस रोग के विशय में जाने और इससे बचने के लिए प्रयासरत रहे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एड्स से निपटने के लिये और समस्या की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए दिसम्बर माह की पहली तारीख को "विश्व एड्स दिवस" घोषित किया, ताकि पूरी दुनिया में इसके विरूद्ध सामाजिक स्तर पर लड़ाई लड़ने का प्रारूप तैयार किया जा सके। इसके उन्मूलन के लिये सामाजिक स्तर पर सामूहिक प्रयासों की आवष्यकता हैं एवं दम्पत्तियों को सुरक्षित यौन सम्बन्धों के बारे में समझने तथा समझाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार यह स्पश्ट है कि एड्स एक वायरस से फैलने वाला गम्भीर व लाइलाज रोग है। नगरों में एड्स के प्रति जागरूकता देखी जाती है, लेकिन गाँव व कस्बे के महाविद्यालय में पढ़ रहे छात्र एवं छात्राओं में एड्स के प्रति कितनी जागरूकता है? यह जानने का प्रयास इस षोध अध्ययन के द्वारा किया गया। इसके लिये समय व साधनों की सीमितता को ध्यान में रखते हुये अध्ययन का क्षेत्र ग्वालियर जिले का शासकीय महाविद्यालय भितरवार लिया गया। इस महाविद्यालय में विद्यार्थियों की कुल संख्या 272 हैं इसमें से 50 छात्र एवं 50 छात्राओं को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया। उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया। तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक समंक साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथा द्वितीयक समंक भारत सरकार मध्य प्रदेश षासन द्वारा समय – समय पर प्रकाषित पुस्तकों, संदर्भ पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं से एकत्रित किए गए।

अध्ययन के उद्देश्य एवं महत्व

1. उत्तरदाताओं का सामाजिक आर्थिक व शैक्षणिक स्थिति ज्ञान करना।
2. एड्स की जानकारी में शिक्षा की भूमिका ज्ञात करना।
3. एड्स की सामान्य जानकारी के लिए दूरदर्शन एवं संचार के साधनों की भूमिका ज्ञात करना।
4. छात्र एवं छात्राओं में एड्स के कारणों की जानकारी का स्तर ज्ञात करना।

उपकल्पनाएँ

1. शिक्षा के कारण एड्स की जानकारी का स्तर उच्च है।
2. प्रचार – प्रसार के साधनों से एड्स की जानकारी के क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

विद्यार्थियों की सामान्य जानकारी के अन्तर्गत उनकी आयु, परिवारिक संरचना, मासिक आय, मूल निवास स्थान, धर्म एवं उनकी शिक्षा से सम्बन्धित जानकारी एकत्रित की गई।

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता स्नातक स्तर की षिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। 82 प्रतिषत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में तथा 18 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार में रह रहे हैं अधिकांशतः उत्तरदाता अर्थात 95 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू धर्म के व 05 प्रतिशत उत्तरदाता मुस्लिम धर्म के हैं। विषय से सम्बन्धित जानकारी इस प्रकार है।

तालिका क्र. 1

उत्तरदाताओं में एड्स की जानकारी का स्तर

एड्स की जानकारी	उत्तरदाता				योग	
	छात्र		छात्रा			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिषत
अधिक	08	16.00	05	10.00	13	13.00
सामान्य	28	56.00	24	48.00	52	52.00
कम	14	28.00	21	42.00	35	35.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 13 प्रतिशत छात्र एवं छात्राओं को एड्स की अधिक जानकारी अधिक है जबकि आधे से अधिक अर्थात 52 प्रतिशत छात्र छात्राओं को एड्स की सामान्य जानकारी है

तालिका का अध्ययन करने से यह बात भी सामने आई है कि सभी छात्र एवं छात्राओं को अधिक सामान्य या कम परन्तु जानकारी है इसका कारण संचार के माध्यम प्रतीत होते हैं।

तालिका क्र. 2

उत्तरदाताओं को सर्वप्रथम एड्स की जानकारी प्राप्त होने वाला स्त्रोत

स्त्रोत	उत्तरदाता				योग	
	छात्र		छात्रा			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
विद्यालय	05	10.00	06	12.00	11	11.00
महाविद्यालय	15	30.00	12	24.00	27	27.00
परिवार	05	10.00	02	04.00	07	07.00
दूरदर्शन	14	28.00	20	40.00	34	34.00
अखबार	06	12.00	06	12.00	12	12.00
पत्रपत्रिकाओं में	05	10.00	04	08.00	09	09.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

एड्स की जानकारी प्राप्त होने वाला स्त्रोत के लिये सारणी का विश्लेषण करने से पता चलता है 28 प्रतिशत छात्र व 40 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि दूरदर्शन द्वारा एड्स की जानकारी सबसे अधिक मिलती है लेकिन साथ ही 30 प्रतिशत छात्र व 24 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि महाविद्यालय में भी एड्स जागरूकता कार्यक्रम के तहत उन्हें एड्स के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

तालिका क्रं. 3

उत्तरदाताओं द्वारा एड्स को छूत की बीमारी मानना

छूत की बीमारी	उत्तरदाता				योग	
	छात्र		छात्रा			
	संख्या	प्रतिषत	संख्या	प्रतिषत	संख्या	प्रतिषत
छूत की बीमारी है	12	24.00	22	44.00	34	34.00
छूत की बीमारीनहीं है।	38	76.00	28	56.00	66	66.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

एड्स के बारे में छुआछूत की धारणा को गलत मानते हुये 76 प्रतिशत छात्र व 56 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि एड्स की बीमारी छूत से सम्बंधित नहीं होती, लेकिन समाज में 34 प्रतिशत लोग आज भी एड्स बीमारी को छूत की बीमारी से सम्बंधित मानते हैं।

तालिका क्र. 4

उत्तरदाताओं द्वारा एड्स परीक्षण करवाने से सम्बंधित मत

एड्स परीक्षण	उत्तरदाता				योग	
	छात्र		छात्रा			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
करवाना चाहिये	12	24.00	08	16.00	20	20.00
नही करवाना चाहिये	15	30.00	20	40.00	35	35.00
मालूम नहीं	23	46.00	22	44.00	45	45.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 35 प्रतिशत उत्तरदाता एड्स परीक्षण करवाने के विचार से सहमत नहीं है जबकि 45 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ है, जबकि 20 प्रतिशत उत्तरदाता जागरूकता के तहत एड्स परीक्षण करवा लेने को उचित मानते हैं।

तालिका क्र. 5

उत्तरदाताओं के अनुसार विद्यालय एवं महाविद्यालय में एड्स जानकारी एवं बचाव की शिक्षा दिये जाने संबंधी विचार

एड्स संबंधी विचार	उत्तरदाता				योग	
	छात्र		छात्रायें			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
शिक्षा दी जानी चाहिये	45	90.00	42	84.00	87	87.00
शिक्षा नहीं दी जानी चाहिये	05	10.00	08	16.00	13	13.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

महाविद्यालय के 90 प्रतिशत छात्र एवं 84 प्रतिशत छात्राओं का मानना है, कि विद्यालय व महाविद्यालयों में एड्स की जानकारी व बचाव सम्बन्धी शिक्षा दी जानी चाहिये एवं जागरूकता संबंधी कार्यक्रम भी करवाये जाने चाहिये जबकि 13 प्रतिशत छात्र छात्राए एड्स की शिक्षा विद्यालय एवं महाविद्यालय में दिये जाने के पक्ष में नहीं है, बातचीत के दौरान यह ज्ञात हुआ कि एड्स को वह यौन शिक्षा से सम्बंधित मानते है जिसे वह विद्यालय एवं महाविद्यालय में दिये जाने के पक्ष में नही है।

तालिका क्र. 6

उत्तरदाताओं के अनुसार विद्यालय एवं महाविद्यालय में एड्स इलाज की जानकारी एवं बचाव की शिक्षा दिये जाने संबंधी विचार

एड्स का इलाज	**उत्तरदाता**				**योग**	
	छात्र		**छात्रा**			
	संख्या	**प्रतिशत**	**संख्या**	**प्रतिशत**	**संख्या**	**प्रतिशत**
इलाज है	15	30.00	12	24.00	27	27.00
इलाज नहीं है।	22	44.00	20	40.00	42	42.00
मालूम नहीं	13	26.00	18	36.00	31	31.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

सारणी के विश्लेषण से पता चलता है कि समाज में अभी भी लोगों को एड्स के इलाज से सम्बन्धित जानकारी नहीं है, क्योंकि 42 प्रतिषत छात्र छात्राओं में एड्स के इलाज से सम्बन्धित जानकारी का अभाव है। जबकि 30 प्रतिशत छात्र व 24 प्रतिशत छात्रा एड्स के इलाज की जानकारी रखते हैं।

तालिका क्रं. 7

उत्तरदाताओं के अनुसार एड्स ग्रसित व्यक्ति को देखकर पहचानना सम्भव

एड्स रोगी को पहचानना	**उत्तरदाता**				**योग**	
	छात्र		**छात्रा**			
	संख्या	**प्रतिशत**	**संख्या**	**प्रतिशत**	**संख्या**	**प्रतिशत**
पहचाना जा सकता है	02	04.00	02	04.00	04	04.00
पहचाना नहीं जा सकता	48	96.00	48	96.00	96	96.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

सारणी से ज्ञात होता है कि छात्र छात्राओं का मानना है कि सामान्यतः एड्स ग्रसित व्यक्ति को देखकर नहीं पहचाना जा सकता।

तालिका क्र. 8
उत्तरदाताओं के ग्वालियर में एड्स परीक्षण होने की जानकारी होना

छूत की बीमारी	उत्तरदाता				योग	
	छात्र		छात्रा			
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
परीक्षण होता है	21	42.00	22	44.00	44	44.00
परीक्षण नही होता है।	29	58.00	28	56.00	56	56.00
योग	50	100.00	50	100.00	100	100.00

ग्वालियर में एड्स परीक्षण होने की जानकारी मात्र 42 प्रतिशत छात्र व 44 प्रतिशत छात्राओं को है। जबकि 56 प्रतिशत छात्र एवं छात्राएँ नहीं जानते है कि ग्वालियर में का परीक्षण होता।

निष्कर्ष – महाविद्यालयीन छात्र छात्राओं में एड्स जागरूकता सम्बन्धी आकड़ों का विश्लेषण करने पर निष्कर्ष बताते है कि छात्र छात्राओं को एड्स से सम्बन्धित जानकारी पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन कार्यक्रम तथा महाविद्यालय आदि में एड्स जागरूकता कार्यक्रम आदि होने से उन्हें एड्स की जानकारी प्राप्त हुई है, तथा वह एड्स की बीमारी को छूत की बीमारी से सम्बन्धित नहीं बताते लेकिन एड्स परीक्षण कराने के लिये समाज में लोग अभी भी असमंजस की स्थिति में हैं अधिकतर लोग एड्स परीक्षण कराने के इच्छुक नहीं हैं, तथा छात्र छात्राओं का कहना है कि एड्स ग्रसित व्यक्ति को देखकर पहचानना संभव नहीं है तथा लोगों में जागरूकता का अभाव है, छात्र छात्राओं को ग्वालियर में एड्स परीक्षण व इलाज से सम्बन्धित जानकारी का अभाव है इसलिये वह यह मानते है कि यदि विद्यालय व महाविद्यालय में एड्स की जानकारी व बचाव की शिक्षा सम्बन्धित जानकारी दी जाये तो समाज में एड्स जैसी बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता।

वर्तमान समय में एड्स की जानकारी के लिये पर्याप्त प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता है ताकि हर व्यक्ति तक एड्स की जानकारी पहुँच सकें। इसके लिये सरकार द्वारा अनेक प्रभावशाली कदम उठाये गये। दूरदर्शन के माध्यम से व अन्य प्रचार साधनों के माध्यम से एड्स की जानकारी जन जन तक पहुचानें का प्रयत्न किया जा रहा है क्योंकि "एड्स की जानकारी ही एड्स का बचाव है।"

इस क्षेत्र में नुक्कड नाटकों की भी अपनी अहम भूमिका रही है इसी प्रकार एन.एस.एस., एन. सी.सी. एवं स्वयं सेवकों की भी इस क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही ही यह स्वयं सेवक घर–घर जाकर व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज में एड्स जागरूकता लाने में सराहनीय कार्यकर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. युवाओं के लिए एड्स शिक्षा, सम्पादक डॉ. भगवान प्रकाश यूनिवर्सिटीज टॉक एड्स, राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा कार्यक्रम एवं खेल विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली 110001, वर्ष 1994 पृष्ठ क्रमांक 20
2. सीधा संवाद, युवाओं से यौन भावना – एच.आई.वी. / एड्स रेखा दत्त अनुवाद डॉ राजेन्द्र राजपूत, प्रशिक्षण, अभिविन्यास एवं शोध केन्द्र, राष्ट्रीय सेवा योजना, समाज कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली 110007 पृष्ठ क्रमांक 1 तथा 2

3. एड्स के बारे में जानकारी, एड्स कन्ट्रोल संगठन पी.एस.एम. विभाग सशास्त्र सेना चिकित्सा महाविद्यालय, पुणे – 41140 वर्श 2004 संषोधित पष्ठ क्रमांक 11

4. राम अहूजा – सामाजिक समस्याएँ द्वितीय संस्करण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली 2000 पृष्ठ क्रमांक 458

5. Gracious Thomas "AIDS and Family Education" Rawat Publication Jaipur and New Delhi P.NO. 13-14

6. डॉ. गणेश पाण्डेय – भारतीय सामाजिक समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2007